OM 14 FINAL-c_Page 1 and 2 02-10-2014 18:20 Page 9

वैकुन्ठपुर-छ.ग.। पुलीस अधीक्षक बी.एस. ध्रुव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.रेखा।

सिद्धपुर। रक्षाबंधन के पर्व पर राखी बांधने के बाद समूह चित्र में पी.आई. जिगर पंडित, भाजपा कॉर्पोरेटर भरत मोदी, ब्र.कु. दक्षा, ब्र.कु.नीपा तथा ब्र.कु.वसंत।

नांगल डैम। तीर्थ सिंह चड्ढा,डिप्युटी कमाण्डेंट, सी.आई.एस.एफ. को राखी बांधने के बाद उपस्थित हैं ब्र.कु.पुष्पा, ब्र.कु.सुमिता, ब्र.कु.रमा, ब्र.कु. राम प्रकाश तथा अन्य अधिकारी।

रुड़की। एस.डी.एम.नितिन कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सोनिया।

कोटद्वार-उत्तराखण्ड। श्री कृष्ण जन्माष्टमी की झाँकी का उद्घाटन करते हुए नगरपालिका अध्यक्षा रश्मि राणा। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति।

बावैन-कुरुक्षेत्र। उद्योगपति देवकी नन्दन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कमलेश।

आत्मा को सात तरह के भोजन की आवश्यकता

शरीर पाँचों तत्व उतनी ही मात्रा में ग्रहण करता है जितनी की शरीर की आवश्यकता होती है। ये शरीर की वास्तविकता है, क्योंकि शरीर उसी पाँच तत्वों से बना हुआ है। इसी तरह इस शरीर में जो चैतन्य शक्ति आत्मा है, आत्मा को भी जीवन जीने के लिए कुछ चाहिए या नहीं चाहिए? कई बार कई लोग समझते हैं कि आत्मा निर्लेप है। उसे कुछ नहीं चाहिए, नहीं। आत्मा को कहा ही जाता है कि 'आत्मा सतोगुणी' है। सतोगुणी अर्थात् उसको भी जीवन जीने के लिए सात गुणों की आवश्यकता होती है। वे सात गुण कौन से हैं जो जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं? सर्वप्रथम उसे 'आध्यात्मिक ज्ञान' चाहिए। आध्यात्मिक ज्ञान क्यों चाहिए? क्योंकि इसी आध्यात्मिक ज्ञान से मनुष्य जीवन में रहा हुआ अज्ञानता का अंधकार समाप्त होता है। मनुष्य जीवन में सबसे बड़ा अज्ञान अगर है तो वो है 'अहंकार'। आज अहंकार के कारण मनुष्य के कर्म कैसे होने लगे हैं? मनुष्य के सम्बन्धों में कितने कलह क्लेश उत्पन्न हो रहे हैं, कितने परिवार टूट रहे हैं, इस अहंकार के कारण। आज मनुष्य को आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता क्यों है? क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान ही इस अज्ञान को खत्म कर सकता है। जब अहंकार समाप्त हो जाता है तब आपसी सम्बन्धों में मधुरता आती है जिससे हम आपस में एक अच्छी समझ डेवलप कर सकते हैं। इसीलिए आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। उसी के साथ-साथ जीवन में शुद्धि और पवित्रता भी चाहिए।

कई बार हम देखते हैं कि किसी दो व्यक्ति की आपस में बहुत अच्छी दोस्ती होती है। कुछ समय के बाद देखो तो वह दोस्ती टूट जाती है और वे एक दूसरे से दूर हो जाते हैं। अगर उनसे पूछा जाए कि आप दोनों में तो बहुत दोस्ती थी, क्या हुआ? कहेंगे कि हमें बाद में पता चला कि ये व्यक्ति अंदर से कुछ और बाहर से कुछ और था। बाहर से बड़ी सफाई वाली बातें कर रहा था लेकिन अंदर से उसका मन मैला था। उसकी भावनाओं में शुद्धि नहीं थी, उसके विचारों में शुद्धि नहीं थी, उसके व्यवहार में शुद्धि नहीं थी इसलिए हमें अच्छा नहीं लगा और हम उससे दूर हो गये। इंसान को अच्छा कहाँ लगता है ? जहाँ विचारों की शुद्धि हो, व्यवहार की शुद्धि हो, भावनाओं की शुद्धि हो। आज यही पवित्रता जीवन में क्यों चाहिए? एक बच्चा जब जन्म लेता है तो कितना पवित्र और मासूम होता है यही उसकी वास्तविकता है। जितना हम जीवन में पवित्र भावनाओं को प्रवाहित करते हैं, उतना ही आत्मा का तेज बढ़ता है। लेकिन जहां अहंकार हो, अशुद्ध भावनायें हो उस सम्बन्ध में कभी भी नि:स्वार्थ प्रेम पनप नहीं सकता है। आज हरेक को जीवन में क्या चाहिए? प्रेम चाहिए। एक बच्चे को भी प्यार चाहिए। बड़े बुजुर्ग के साथ यदि कोई प्यार से व्यवहार करता है तो उसे भी अच्छा लगता है। ये नहीं कि बड़े बुजुर्ग ने सारा जीवन बहुत प्यार पाया है। बुढ़ापे में अगर प्यार नहीं भी मिला तो चलेगा, नहीं। हर इंसान को प्यार चाहिए और वो भी नि:स्वार्थ प्यार चाहिए। नि:स्वार्थ प्यार कैसे सम्बन्धों में पनप सकता है? जब आपसी समझ हो, पवित्र भावनायें हो, तब नि:स्वार्थ प्रेम प्रवाहित होता है। आज कैसी विडम्बना है कि हर मनुष्य प्यार चाहता है लेकिन यदि कोई प्यार से बात करता है तो उसे टेंशन होने लगती है कि ये व्यक्ति इतने प्यार से क्यों बोल रहा है? क्या चाहिए इसे? अर्थात् वह स्वयं को रिलैक्स महसूस नहीं करता है, चाहिए उसको भी प्रेम। जहाँ ये तीनों गुण हैं, अंडरस्टैन्डिंग है अर्थात् ज्ञान है, पवित्र भावनायें हैं, प्रेम है, वहां व्यक्ति रिलैक्स फील करता है, वहाँ ही शांति होती है। जहाँ ये चारो हैं, वहाँ जीवन में सच्चे सुख का अनुभव होता है और जहाँ ये पांचो है वहाँ जीवन की सर्वोच्च प्राप्ति आनंद है। आज मनुष्य के जीवन में आनंद नहीं है, खुशी नहीं है। हर व्यक्ति यही चाहता है कि मेरे जीवन में खुशी हो, आनंद हो। जहाँ ये छः गुण हैं वही 'आत्मशक्ति' का अनुभव होता है। क्योंकि ये छः गुण नहीं बल्कि छः शक्तियाँ हैं। ज्ञान की शक्ति, पवित्रता की शक्ति, प्रेम की शक्ति, शांति की शक्ति ये सब शक्तियाँ हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यही आत्मा का स्वधर्म है। - क्रमश:

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

पीस ऑफ माइंड चैनल अब हर गाँव में उपलब्ध

आप सभी को यह जानकर अति हर्ष होगा कि आपका पसंदीदा आध्यात्मिक चैनल 'पीस ऑफ माइंड' अब भारत के लगभग सभी डिस टी.वी. पर उपलब्ध है। आप इस 24 घण्टे चलने वाले आध्यात्मिक चैनल के माध्यम से टेंशन फ्री हैप्पी लाइफ, पर्सनैलिटी डेवलपमेंट, स्वास्थ्य तथा मानसिक अवसाद से मुक्त होने के लिए आध्यात्मिक कार्यक्रमों का घर बैठे सुन व देखकर लाभ उठा सकते हैं।

टाटा स्काई में 192 नं. , एयरटेल डिजिटल टी.वी.में 686 नं., विडियोकॉन डी.टू.एच. में 497 नं. तथा रिलायंस बिग टी.वी. में 171 नं. पर 'पीस ऑफ माइंड' चैनल उपलब्ध होगा। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें – 9414151111, 8104777111

वारडोली। बस डिपो मैनेजर मनोज चौधरी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.जयश्री।

ब्रह्माकुमारी संस्थान की डॉक्टर टीम के साथ राहत समग्री का वितरण

राहत सामग्री वितरण की तैयारी करतें हुए ब्रह्माकुमार भाई-बहने।

जम्मू कश्मीर। जम्मू कश्मीर में आये महाप्रलय के पश्चात् राहत पहुँचाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के ग्लोबल हॉस्पिटल के डॉक्टर्स की टीम दवाई और जीवनावश्यक चीज़ों के साथ जम्मू में पहुँची। वहाँ के हालात बहुत ही दर्दनाक हैं, बाढ़ग्रस्त लोगोको गर्म कपड़े ,कंबल तथा आवश्यक दवाईयां दी गई।

ऐसे में वहाँ के ब्रह्माकुमारीज़ के लोकल ब्रांच द्वारा बाढ़ग्रस्त लोगों के लिए 'स्पेशल रिलीफ कैम्प एंड मेडिटेशन' नामक शिविर लगाया गया है, जिसमें बातचीत के लिए एच.ए.एम. रेडियो, भारतीय चिकित्सा संघ द्वारा चिकित्सा कैम्प तथा जीवनावश्यक वस्तुयें उपलब्ध कराई जा रही हैं। आपका सहयोग अपेक्षित है।

पता- ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउण्ट आबू – 307510

एकाउण्ट नेम - ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर

एकाउण्ट नम्बर 4087020111000229 : यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, माउण्ट आबू, आई.एफ.एस.सी.कोड: UBIN0540871

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें – 7891109999, 9783559999

E.mail - karuna@bkivv.org